International Journal of Education & Applied Sciences Research, Vol.3, Issue 02, Feb-Mar- 2016, pp 39-42 ISSN: 2349 –2899 (Online) ISSN: 2349 –4808 (Print)

आरसीम ARSEAM
www.arseam.com

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर

डॉ. एकता झा

व्याख्याता, एस.पी.यू. कॉलेज,
फालना, पाली (राज.)

Abstract

वर्तमान में भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अन्य क्षेत्रों से काफी पिछड़ा हुआ है। अतः सरकार द्वारा शिक्षा के लिए अत्यधिक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं पर इनका क्रियान्वयन उचित ढंग से नहीं किया जा रहा है। शिक्षा के स्तर में वृद्धि तब ही की जा सकती है जब गाँवों के सभी आयु वर्ग के लोग शिक्षित होंगे।

"शिक्षा रहित व्यक्ति का जीवन टूटे दर्पण के समान होता है"

– *महादेवी वर्मा*

शिक्षा का अपना विशिष्ट अर्थ होता है–

E	-	Etiquette	–	शिष्टाचार
D	-	Discipline	–	अनुशासन
U	-	Universal Brotherhood	–	विश्व बंधुत्व
C	-	Creativity	–	सृजनषीलता
A	-	Awareness	–	जागरूकता
T	-	Transformation	–	आदर्श
I	-	Intelligence	–	बुद्धिमता
O	-	Optimism	–	आशावादिता
N	-	Nobility	–	सौजन्य

भारत में ग्रामीण शिक्षा–

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत सरकार ने अपना संविधान लागू किया जिसमें जीवन के समस्त सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में पुरूषों और महिलाओं को समान अधिकर दिए गये। आज गाँवों में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवम् निःशुल्क बना दिया गया है जिससे सबसे अधिक लाभ ग्रामवासियों को हुआ है। एक वक्त था जब ग्रामीण छात्र पेड़ों के या छप्पर के नीचे पड़ते थे। आज वर्तमान में प्रत्येक गाँवों में पक्के स्कूल बना दिए गए हैं। लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम और कस्तूरबा गाँधी बालिका योजना शुरू की गई है। इन कार्यक्रमों से गाँवों के बेसहारा और अशिक्षित बच्चों को लाभ पहुँच रहा है।

उपरोक्त तालिका के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक साक्षरता दर सन् 2011 में 74 प्रतिशत रही जबकि सबसे कम सन् 1951 में 18.33 प्रतिशत रही।

ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई योजनाएँः–

- **निःशुल्क बालिका शिक्षा–**

स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय, महाविद्यालय स्तर पर बालिकाओं को बिल्कुल निःशुल्क शिक्षा देगी।

- **शिक्षा परियोजना–**

यह योजना स्वीडन सरकार की सहायता से प्राप्त 90 प्रतिशत अंशदान से चलाई जा रही है। योजना का उद्वेश्य दूर–दराज के क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन की स्थिति सुधारना है।

- **मिड–डे मील कार्यक्रम–**

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्वेश्य पोषाहार के स्तर में सुधार करते हुए बच्चों की पढ़ाई जारी रखने का प्रयास करना है। वर्तमतान में 14 करोड़ बच्चे इसका लाभ उठा रहे हैं।

- **सरस्वती योजना–**

इसका प्रमुख उद्वेश्य ग्रामीण क्षेत्रों में 6–14 वर्ष की बालिकाओं को उनके निवास स्थान के निकट प्राथमिक शिक्षा दिलवाना है।

- **ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना (1987)–**

ऑपरेशन ब्लेक बोर्ड योजना में सुधार लाने तथा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु 1987–88 में केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गई। इस योजना में निम्न बातें हैं–

1. प्रत्येक विद्यालय में कम से कम दो शिक्षक हो।
2. ब्लैक–बोर्ड, चार्ट, नक्शा, खिलौने आदि का प्रबंध करवाना।
3. विद्यार्थियों में शौचालय बनवाना।

- **सर्व शिक्षा अभियान (2001)–**

2001 के बजट में सर्व शिक्षा अभियान की घोषणा की गई। इस योजना के अंतर्गत कुल 98,000 करोड़ रूपये की राशि केन्द्र सरकार द्वारा खर्च की गई इसका उद्वेश्य ग्रामीण बालक–बालिकाओं को हर दिशा में 1 से 8वीं तक शिक्षा प्रदान करना ळें

ग्रामीण शिक्षा की

–शिक्षा में पाठ्यक्रम संबंधी समस्या है। वर्तमान में पाठ्यक्रम कठोर, अरूचिकर व एक मार्गीय हैं।

- शिक्षा पर व्यय बहुत कम है। सरकार अन्य देशों की तुलना में शिक्षा पर व्यय बहुत कम करती है।
- सामाजिक व आर्थिक कारणों से प्राथमिक स्कूलों से छात्र–छात्राओं को बीच में ही अध्ययन छोड़ना पड़ता है।
- भारत में वर्तमान राजनैतिक व सामाजिक माहौल से शिक्षा के वातावरण में अनुशासनहीनता पाई गई।
- गाँवों के छोटे आकार होने के कारण कई गाँवों में प्राथमिक विद्यालय नहीं खोले जाते।

- शिक्षा में प्रेरणा का अभाव पाया जाता है।

ग्रामीण शिक्षा के लिए समाधान–

- ग्रामीण इलाकों में शिक्षा एवं साक्षरता का प्रसार किया जाये जिससे गाँवों में स्वस्थ व सामाजिक वातावरण तैयार हो।
- सरकार को शिक्षा के प्रशासन पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।
- सरकार को शिक्षा के लिए पर्याप्त बजट का प्रावधान करना चाहिए।
- छात्रावास व आवासी पाठशालाओं में जहाँ तक संभव हो वृद्धि की जाए।
- जो अभिभावक गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं, उन पर से शिक्षा का बोझ पूरी तरह खत्म किया जाये।
- प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की दूरी अधिक होने पर आवागमन के साधनों की व्यवस्था कराई जाए।

संदर्भ सूची–

1. दुबे श्यामचरण (2001); “शिक्षा समाज और भविष्य”, राधाकृष्ण प्रकाशन, जगतपुरी, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 25
2. पत्रिका इयर बुक (2001), “भारत में शिक्षा” पृष्ठ संख्या 629
3. ओझा बी.एल. (2011), “भारतीय अर्थव्यवस्था”, पृष्ठ संख्या 108
4. भारत की जनगणना 2011
5. धर प्रांजल (2012) “शिक्षा की भूमिका और हमारा देश”, योजना, जनवरी, पृष्ठ संख्या 18